शहीद अस्पताल
स्वास्थ्य संगवारी

अंक - 5
मार्च 2020

मेहनतकशों के स्वास्थ्य के लिए
मेहनतकशों का अपना कार्यक्रम
सहयोग राशि रू. 6.00 मात्र

e-mail : shaheedhospital@gmail.com
फोन : 75877 58107 Website : www.shaheedhospital.org

लाल जोहार साथियों हमारी स्वास्थ्य पत्रिका के इस अंक में आपका स्वागत है।

साथियों इससे पहले हमने ब्लड प्रेशर संम्बधित चर्चा किये थे। इस अंक मे हम माहवारी के विषय मे चर्चा करेंगे।

संपादकीय

सुबह मीनु का मन बहुत खराब था। दिन भर घर के एक कमरे मे अकेली बैठ रो रही थी उसके बाद थोडा ठीक लगने पर घर से निकल गई और थोडी देर नाला से जंगल तरफ घुमकर वापस आई, तब भी उसका मन ठीक नही हुआ। वो सोच रही थी क्या हुआ, आज जब सुबह मीनु उठी तो उसके जांघो मे खून था, उसको समझ नही आया ये कैसे हुआ। न चोट है न कुछ, बस दो दिन से पेट दर्द था और वो मां को भी बताई थी। पर आज वो मां को भी नही बोल पायी । वो सोच रही थी कि क्या बीमारी हुआ होगा डरते हुए फिर मां के पास गई और रोते हुए मां को बताने लगी तब मां हंस रही थी । फिर मां बोली कुछ नही होगा डर मत सभी लडकियो को ऐसा होता है। मां ने बताया सब लडकियो को 12, 13 साल की उम्र से माहवारी शुरू होता है। इसमे डरना नही है तुम्हारे उम्र मे मुझे भी ऐसा हुआ था । तब मेरी मां ने मुझे समझाया था, और बताया था इस समय क्या और कैसे करना चाहिए।

माहवारी होना एक स्वाभाविक और शरीरिक परिवर्तन के कारण होता है। जो जरूरी है इसके बारे मे सही जानकारी न होने के कारण लोग उल्टा पुल्टा सोचते रहते है, और इस बात के चलते महिलाओ पर कई सारे प्रतिबंध लगाते है। आमतौर पर माहवारी 3 से 7 दिन तक शुरू रहता हैं। इस दौरान उनको अशुद्ध समझ कर कई कार्यो जैसे रसोई घर से दूर पुजा घर से दूर रखा जाता है। महिलाओ मे उनके जीवनकाल मे लगभग 400 बार माहवारी होता है।

बचपन बहुत खुबसुरत बहुत प्यारा
मम्मी के प्यारे पापा के आँखो का तारा
छिडकते है सब जान भाई बहन की हुं। मै शान
पर जिन्दगी मे मोड ऐसा आया
जब मुझे मेरी पहचान का अस्तित्व समझ आया
नींद के आगोश से मुझे बुलाया
वक्त बेवक्त मुझे क्यो इतनी ठण्डी लग रही है
मेरे बिस्तर पर क्यो इतनी नमी है।
आँखे मिल मिलाकर थोडी हिम्मत जुटाकर
अचानक से अपनी रजाई को हटाती हूँ
देखकर लाल रंग मै सहम सी जाती हू,
इतनी रात को मुझे कोई चोट लग गई थी।
लेकिन कुछ समझ न आया चोट लगी
तो दर्द क्यों नही हुआ बडी अजीब सी बेचैनी थी
लेकिन मै लाल रंग को समझने लगी थी
फिर जब हार गयी तो मैने मम्मी को जगाया
अपनी सहमी सी आवाज मे मम्मी-मम्मी कहकर उन्हे उठाया।
तेज आवाज सुनकर मम्मी भी घबरा गई
जल्दी से उठकर मुझे गले से लगाया
फिर पूछा क्या हुआ बेटा इतनी रात को क्या कोई सपना देखा

मैने मम्मी की ओर देखा ओर बिस्तर की ओर उंगली दिखाया
देख उसको मम्मी मेरी हल्की सी मुस्कुराई
और गले लगाकर मुझे बताया
बेटा यह हर लडकी के साथ होता है।
महिने के कुछ दिन योनी से खून निकलता है।
अब से यह तुमको हर महिने आयेगा
और तुमको लडकी होने का अहसास करवाएगा
यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो कल नया जीवन लायेगा।
मम्मी की बातों को समझना थोडा मुस्किल था
लेकिन इस मुस्किल से निकलना भी जरूरी था
ठण्ड के मौसम से डर से कांप रही थी
मै फिर मम्मी ने मेरे कपडे बदलवा कर
दाग न लगने के तरीके को समझाया
चादर बदल कर मुझे लिटाया,
मांथे को चूम कर गले लगाया
क्यू होता है ये क्या होता है
यह सब मुझे समझाया
यह लाल रंग की कहानी है
जो मेरे लडकी होने की निशानी है।

मासिक धर्म :

मासिक धर्म स्त्री जनन अंग कि सबसे महत्वपूर्ण किया है। यह प्रकृति द्वारा प्रतिमाह गर्भधारण हेतु कि गई तैयारी है। हर माह एक समय होता है स्त्री मे प्रजनन काल मे औसतन 28 वे दिन कि अवधि पर गर्भाशय से रक्त श्लेष्मा एंव कुछ अन्य द्रव्यो का नियमित स्त्राव मासिक धर्म कहलाता है। यह 12 से 14 वर्ष की अवधि से प्रारम्भ होकर 45 से 50 वर्ष की आयु तक रहता है। यह स्त्राव 4-6 दिन तक रहता है।

मासिक धर्म का प्रारम्भ होना

जब कन्यांए यौन अवस्था मे आती है, तब उनके गर्भाशय से योनि मार्ग द्वारा प्रत्येक महीने लाल रंग का रक्त निकलता है। यह माहवारी मासिक धर्म का प्रारम्भ होना लडकियों के युवती होने का चिन्ह है। आमतौर पर कन्या जब 12-14 वर्ष की हो जाती है। तब मासिक धर्म शुरू होता हैं।

माहवारी आने के समय होने वाले लक्षण

1 माहवारी शुरू होने के पहले पेट के निचले हिस्से कमर पीठ जाघों मे भारीपन तनाव और कभी कभी पीडा भी होती हैं।

2 माहवारी के समय स्त्रीयां चिडचिडी हो जाती है, तबियत खराब हो जाती है।

3 स्तनो मे चुभने जैसी पीडा।

4 सीने मे तनाव या चुभन बार बार पेशब आना सिर दर्द सुस्त आदि होता है। यह मासिक शुरू होते ही ठीक हो जाती है।

मासिक धर्म मे ध्यान रखने योग्य बातें

1 मासिक धर्म एक शरीर की सामन्य प्राकृतिक किया है।

2 मासिक धर्म प्रारम्भ होने से पहले हि लडकियों को इस बात का ज्ञान देना चाहिए। और शरीर की स्वच्छता कैसी रखी जाये इसके साथ ही यौन शिक्षा भी देनी अति आवश्यक है।

3 महिलाओं को इस दौरान और साधारण समय मे भी स्वच्छ रहना चाहिए, प्रतिदिन स्नान करना हानिकारक नही होता है।

4 संतुलित व पोषक आहार खाने की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। वह हर चीज को खा सकती है जो प्रायः उसका सामान्य आहार हो। घर का सामान्य काम काज कर सकती है।

5 मासिक धर्म के दौरान संभोग करने से कोई नुकसान नही होता।

6 साफ कपडा प्रयोग करें गंदा कपडा प्रयोग करने या भीगा कपडा जल्दी जल्दी न बदलने से संक्रमण लग सकता है। दिन मे कम से कम 3-4 बार पैड या स्वच्छ कपडा बदले।

7 किशोरी लडकियों का मासिक धर्म अनियमित हो या उन्हे इस अवधि मे पीडा हो तो यह सामान्य बात है।

मासिक धर्म की समस्याएं :

- पीडा युक्त मासिक धर्म (Dysmenorrhea)
- अनियमित मासिक धर्म (Irregular periods)
- अनापेक्षित योनि रक्त स्त्राव (Abnormal Bleeding Menorrhagia)

1 पीडा युक्त मासिक धर्म :— (Dysmenorrhea) . यह ऐठन युक्त या सिकुडन पूर्ण दर्द पेट के निचले भाग पर होता है। यह मासिक शुरू होने के कुछ घंटे पहले होता है और मासिक स्त्राव पूर्णतः आने के साथ खत्म होने लगता है। यह दो प्रकार के होते है :-

1 **प्राथमिक** : यह सामान्य दर्द और ऐठन का दुसरा नाम है आमतौर पर यह महिला के मासिक धर्म शुरू होने के एक से दो वर्षो के भीतर होता है। उम्र बढने के साथ यह स्थाई रूप से गायब हो जाता है।

2 **द्वितीयक** : यह महिला के जननांगो मे किसी विकार के फलस्वरूप उत्पन्न दर्द को कहते है। यह दर्द मासिक चक्र के आरंभ मे शुरू होता है। सामन्य ऐठन के मुकाबले अधिक समय तक बना रहता है।

मासिक धर्म के दौरान अत्यधिक पीडा होने पर डॉक्टर कि सलाह लेना चाहिए।

2. अनियमित मासिक धर्म :— मासिक धर्म के बीच की अवधि 25-35 दिनो के बीच का कम या ज्यादा होना कुछ स्त्रीयो के लिए सामान्य होता है। कुछेक अन्य स्त्रीयो मे यदि ऐसा हो तो वह किसी दीर्घकालीन रोग, खून कि कमी, कुपोषण का संकेत हो सकता है।

3. अनापेक्षित योनी रक्त स्त्राव :— अनापेक्षित रक्त स्त्राव का कारण गर्भाशय मे गाठ होने के कारण भी हो सकता है। जो कि माहवरी के दौरान लम्बे समय तक या मनोपाज के बावजूद हो सकता है, गर्भाशय मुख का कैंसर भी Menrrhagia का कारण हो सकता है। भारत मे महिलाओं को गर्भाशय के मुँह का कैंसर ज्यादा होता है।

माहवारी से संबंधित प्राचीन धारणायें :

1. रोमन सोचते थे कि महिलाओ के शरीर मे डायन प्रवेश करती है, इस कारण माहवारी होता है।
2. फारसी सोचते थे कि माहवारी के समय सम्बंध बनाने से दानव का जन्म होता है।
3. युरोपियन सोचते थे कि माहवारी का रक्त कुष्ठरोग को ठीक कर देता है।
4. कुछ लोग सोचते कि माहवारी के ब्लड से यौन शक्ति बढती है।
5. 19वीं सदी मे लोगो का ये सोचना था कि माहवारी के समय महिला खाना छु ले तो सड जाता है।
6. विनस वैज्ञानिक सोचते थे महिला माहवारी के समय Menotoxins निकलता है जो पौधो को खराब कर देती है।

पैड का इतिहास :

1. प्राचीन इजीपसियन मे महिला माहवारी के खुन सुखने के लिए Papyrus पेंड की छिलके का उपयोग करते थे।
2. यूरोप मे मेंढक को जलाकर राख को ज्यादा खून जाने से योनी के बाजु मे थैली मे रखा जाता था।
3. पहला विश्व युद्ध के समय पहली बार सनेटरी पेड तैयार हुआ जिसका नाम कोटेक्स (Cotex) था।
4. भारत मे माहवारी के समय महिलाओ को रखने के लिए अलग एक घर रखा जाता था।
5. पैड के लिए पहले महिलायें रूई घास खरगोश का बाल इस्तेमाल करते थे।
6. असम कि कामाख्या मन्दिर मे माहवारी उत्सव मेला 4 दिन तक मनाया जाता है।

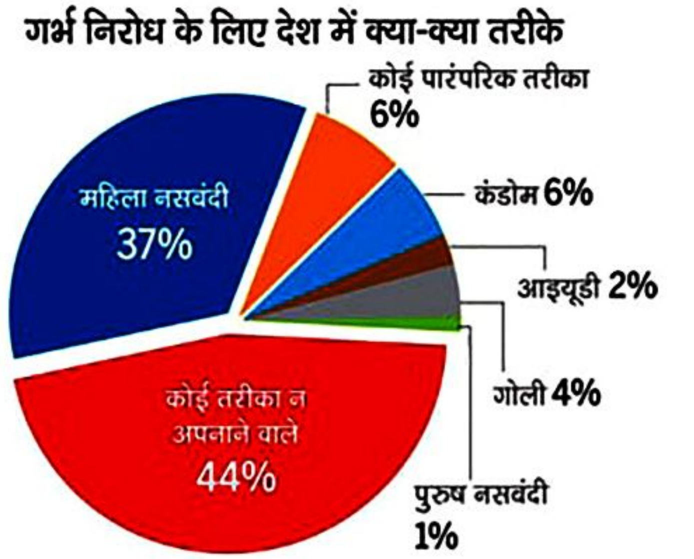

रजोनिवृति (Menopause) : मासिक धर्म के स्थाई रूप से बंद हो जाने को रजोनिवृति कहा है सामान्यतः कन्याओ को 14-15 की आयु मे या उससे पूर्व मासिक धर्म प्रारंभ हो जाता है, तब से लेकर 45 से 50 वर्ष की आयु तक प्रत्येक माह मासिक धर्म होता है ।

भिन्न-भिन्न स्त्रियों मे रजोनिवृति भिन्न-भिन्न प्रकार से होती है, किसी मे मासिक धर्म आकस्मात बंद हो जाता है कुछ मे धीरे-धीरे एक या दो वर्ष मे बंद हो जाता है। रजोनिवृति होने के बाद महिलाएँ गर्भवती नही हो सकती है।

रजोनिवृति के लक्षण :–

1. नींद सबंधित समस्या, इस दौरान नींद नही आती या तो बहुत ज्यादा नींद आती है।
2. हड्डियों का कमजोर होना।
3. शरीर के हार्मोंश के स्तर मे बदलाव होना।
4. बाल झडना।
5. माहवारी न आना।

गर्भ निरोधक (Contraception) :- स्थाई और अस्थाई दोनो साधनो के प्रयोग से होता है।

स्थाई साधन : 1. महिला नसबंदी
2. पुरूष नसंबदी

अस्थाई साधन : कॉपर टी, कॉण्डम, माला डी, माला N, पर्ल, इत्यादि माला डी, माला N ये सब कम्बांइन ओरल पिल्स कहलाता है। जिसमे प्रोजेक्टोन और एस्टोजन नामक हार्मोसं मिला होता है। ये ही दो हार्मोसं महिलाओं के मसिक धर्म को नियमित करने के लिए उत्तर दायी है।

यदि किन्ही कारणों से नियमित उपयोग की जाने वाली गोली चुक जाती है। या अन्य साधन जो उपयोग मे ला रहे है उसमे चूक होने पर गर्भधारण का भय बना रहता है। इस परिस्थिति मे Emergency Contraceptive (E- Pill) का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा , असुरक्षित यौन संबंध, निरोध का फटना Sexual Assalt या अनियोजित संबंध स्थापना जिसमे गर्भ की चाह न हो अपातकालीन गर्भ निरोधक प्रयोग मे लाया जाता है।

आपातकालिन गर्भ निरोध के प्रकार :

1. Morning After Pills :- दिन मे दो बार पॉच दिनो तक लेना होता है पहली खुराक अनियोजित संबंध के 72 घंटे के अदंर ही लेना है।
2. **टी पिल्स :–** इसकी दो खुराक 12 घंटे के अदंर दिया जाता है। यह पिल भी पहली असुरक्षित यौन संबंध के 72 घंटे के अंदर लेना होता है। वर्तमान मे यह शासकीय संस्थाओ मे EC Pills के रूप मिलता है। और बाजार मे T-Pill72 के नाम से मिलता है।

सावधानी :– यह आपातकालीन प्रयोग के लिए है नियमित प्रयोग से हानि हो सकती है। इसके प्रयोग मे कभी-कभी मितली और उल्टी भी होती है, फिर भी यह अन्य साधनो से अधिक सुरक्षित है।

ये इसी पील्स है
इसे हमेशा न प्रयोग करना।
जब आये आपात स्थिति
तभी प्रयोग करना।
इसमें अधिक हार्मोन्स है
जो बचाता है अनचाहे गर्भ से।
पर हानि भी है इसके
नियमित प्रयोग से ।
जब नियमित नियोजन असफल हो
या दुर्घटना पूर्ण संबंध हो ।
जब असुरक्षित यौन संबध हो ।
तभी इसी पील्स का प्रयोग करना ।
नियमित प्रयोग से इसके महिने बिगड सकते है।
किन्तु आवश्यक होने पर
व्यक्ति के सम्मान सम्हल सकते है।
इसलिए इसे आवश्यकता पर ही प्रयोग करना
ये इसी पील्स है इसे हमेशा न यूज करना।

सुखबती दाई हर अपन नवा बहु ममता ला घर के बारे मे बतावत हे :

सास : देख बहु हमन चार लोग हन अब तोर करे पॉच झन होगेन। 5 उगली बराबर हाथ के मुठा सरीक बांध के रखबे।
तोर ससुर मतलब घर के प्रधांनमंत्री घर के सियानी उही करथे। तोर पति आपूर्ति मंत्री हरे रासन पानी के पूर्ति उही करथे। तोर नंनद योजना मंत्री कुछ भी कार्यकम करना हे ता वो योजना बनाये।

बहु : हव मॉं

सासः का करबे बहु तोर आये ले पुजा करवाबो कहे रहेन आज हर चार दिन होगे पारा परोस मे बता डारे हन सब मन नवा बहु के हाथ के खाबो काहत रहिन फेर तोर माहवारी आगे हे न पुजा मे बैठ सकस न रधनी घर मा जा सकस।

बहु : कहि नई होय मॉं रखवा दे पुजा अउ मेहा खीर घलो बना लेहुं।

सास : टार दई भगवान गुस्सा हो जाही अइसने पुजा मे बैइठबे।

बहु : हव मॉं कुछ नई होय वो सब पुराना बात ये। रखवा देबे पुजा।

सास : अब अतिक बोलत हस त ठीक हे पुजा करवा लेथन।

बहु : ठीक हे मॉं।

सास : चल बने निपट गे पुजा हर, सब खुस होके गिन हे।

बहु : हव मॉं।

सास : कइसे बहु मोर तो माहवारी बंद होय 2 3 साल होगे हे फेर कइसे खुन जात हे रात ले। मै बोले रेहेव माहवारी के चलते पुजा नई रखन सब तोर कारण हरे भगवान नराज होगे। मही रखे रहेव पुजा ता मोला सजा मिलत हे।

बहु : अइसन नई होय मॉं।

सास : देखत-देखत 8-10 दिन होगे खुन जाना बंदेच नई होय, लगथे बइगा गुनिया मेर जायेला पडही, कइसे चक्कर आवत हे मोला।

बहु : मॉं मोर बात मान बइगा ले कुछु नई होय चल डॉक्टर मेर दिखाबो तोर बेटा ला आज काम मे जायेबा मना करथो।

सास : ले चलो जिहां जाना हे लेगो फेर मोला बचाओं।
मोर सहेली के मॉं अइसने होय रहिस डॉक्टर मेर जा के इलाज करवाए ले पता चलिस कि बच्चादानी मे गाठ रहिस, डॉक्टर मन बोलथे बच्चादानी मे गठान अउ केंसर होय ले अइसने होथे ।

सास : चल ता बहु हमन जल्दी जाथन अस्पताल।

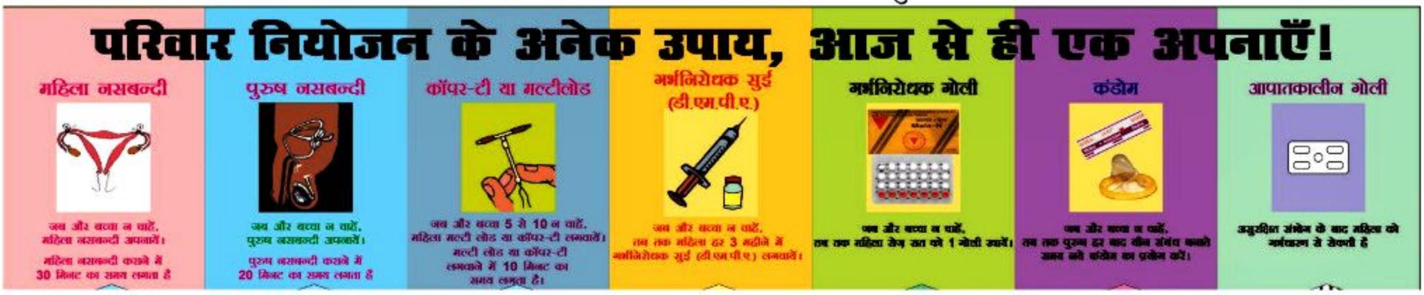

अमीला का गर्भावस्था

छोटे गांव की रहने वाली अमीला महज 27 वर्ष की थी। उसकी पहली शादी थी पर वो अपने पति की दुसरी पत्नी थी । चूकि उसके पति के पहली पत्नी का किसी कारणवश मृत्यु हो गई थी। और उसके दो बच्चे भी है तो उसके पति ने अमीला से दुसरी शादी की थी। अमीला के शादी को लगभग साल भर ही हुआ था कि वह गर्भवती हो गई उसका पहली बार ही गर्भधारण हुआ था। अमीला गांव के बाकी महिलाओं की तरह शुरू से लेकर 9 माह तक जांच वही गांव के स्वास्थ्य केन्द्र मे कभी कभार जॉच करवा लेती थी इस बीच उसे कोई समस्या नही रहा तो अमीला और उसके पति ने बाहर इलाज कराने के विषय मे सोचा भी नही इधर देखते देखते अमीला का गर्भवस्था पूरा हो रहा था।

9 माह अमीला के पुरे हुए तो अचानक उसे दर्द उठा। दर्द होने के कुछ देर बाद वह अपने घर मे रहने वाली बुआ को बताती है फिर वो जाकर गांव मे रहने वाली दीदी को बताई । मितानीन दीदी भी तुंरत अमीला के पास आई और उसे देखकर कहा डिलवरी का समय हो गया है इसे तुंरत अस्पताल लेकर चलो । चूकि कि सुबह का वो समय था लगभग 10.30 ही बजे रहे होगे गांव के पास एक आमाडुला नाम का गॉव है। जो अमीला के गांव लगा हुआ है वहां अमीला को ले जाया गया । जहां अस्पताल मे दो सिस्टर उपस्थित थे वहां उन्होने अमीला को देखना शुरू किया और कहा कि अमीला यहां नार्मल डिलवरी हो जायेगी । सुबह का समय था सबको सुन के अच्छा लगा।

सिस्टर ने अमीला को तथा उसके घर वालो को बच्चे की धडकन सुनाई। फिर सिस्टर ने मितानीन दीदी को ये भी दिखाया कि बच्चा इतना पास मे है कि उसका सिर का बाल दिखाई दे रहा है जिससे सब को लगा कि अमीला कि अच्छे से नार्मल डिलवरी हो जायेगी। और अमीला को भी लगा था कि सब कुछ अच्छे हो जायेगा ऐसा तो अमीला के मन मे और उसके घर वालो को भी थोडी तसल्ली मिली।

फिर उसके बाद सुबह से देखते-देखते दोपहर का शाम हो गया और शाम का रात हो गया था । इस बीच मे अमीला थक चुकी थी और बच्चा जहां था जैसा था वैसा ही था नीचे आने का नाम ही नही ले रहा था। इस बीच रात मे सभी उसके घर की बुआ और मितानीन तथा सिस्टर उसे नीचे जोर देने के लिए कहते थे पर वो ताकत नही लगा पाती थी, क्योंकि उसके अंदर तो ताकत बची ही नही थी । शायद धीरे-धीरे रात ऐसे ही बीतती गई अमीला पुरी रात दर्द सहते रही और अब अमीला पुरी तरह से कमजोर हो चुकी थी । वो किसी को जाच भी करने नही दे रही थी जिसे लेकर सब परेशान हो गये थे और पुरी रात भी बीत गई पर नार्मल डिलवरी नही हुई।

सुबह जब सिस्टर ने बच्चे का धडकन सुना तो बच्चे का धडकन सुनाई देना बंद हो गया था । जिसे लेकर सिस्टर ने उसे फिर दूसरे जगह रिफर किये। लगभग वहां से उसको 11 बजे सुबह समय ही भेजा गया। आधा एक घण्टे वह वहां पहुंच गयी रिफर सेन्टर मे वहां भी दो तीन लोगो ने उसको देखा पर शायद उन्हे भी अमीला की हालत देखकर समझ नही आ रहा था । फिर उन्ही लोगो मे से शायद किसी डॉक्टर ने सलाह दिया किसी दुसरे डॉक्टर को बताया तो उन्होने उसे यहां तुरंत रिफर करने को कहा क्योकि अमीला को अब अच्छे चिकित्सा की जरूरत पड गयी थी । इधर अमीला की हालत तो देखते-देखते बिगडती जा रही थी फिर अमीला को शहीद अस्पताल मे लाया गया चुकि अमीला डिलवरी दर्द मे थी तो उसको हर माता कि तरह डिलवरी रूम मे ही ले जाया गया और तुरंत दो सिस्टर उसके पीछे-पीछे गये, यह करीब दिन के 1 बजे होंगे जब दो सिस्टर द्वारा देखा गया वो बहुत गभींर अवस्था मे थी तुरंत ही दोनो सिस्टरो ने अमीला की हालत को देखते हुए उन्होने मदद के लिए और सिस्टर को बुलाया तो तुरंत हम लोग भी पहुच गये हमने भी अमीला को देखा तो अमीला दर्द से कहार रही थी उसके पास बात करने की बिलकुल भी क्षमता नही थी हम लोगो ने उसका बीपी पल्स, नाडी बल्ड प्रेशर देखा तो बीपी नही था पल्स था पर वह ई-रेगुलर था जिसे उसे काउंट भी नही हो पा रहा था रेशपीरेसन था पर वो भी काफी बढा हुआ था अमीला के माथे पर हल्का पसीना था वो हमारे बातो को सुन तो रही थी पर कुछ कह नही पा रही थी ऐसा लग रहा था मानो वो हमे बडी उम्मीद भरे नजरो से देख रही थी ।

अमीला के इस हालत को देखते हुए हमने बिना समय गवायें अमीला का तुरंत उपचार करना प्रारंभ कर दिया जो हम कर सकते थे और इधर तुरंत ही डाक्टर को बुलाए चुकि मंगलवार का दिन था और उस दिन अस्पताल बंद रहता है। फिर भी आपात कालीन सेवा निरन्तर चालू ही रहती है डाक्टर साहब को गये कुछ ही क्षण हुए थे कि हमने पुनः फोन किया। डाक्टर अमीला के स्थिति के बारे मे बताए तो उन्होने भी अमीला के उपचार के लिए तुरंत अस्पताल आ गये और अमीला को देखते ही कहा की अमीला का इमरजेन्सी ओपरेशन करना पडेगा। बच्चे का पेट के अन्दर मृत्यु हो गया है और बच्चादानी भी फट गया है काफी समय भी बीत गया है अभी अमीला को तुंरत बल्ड की आवश्यकता थी उसके शरीर मे काफी मात्रा मे खुन की कमी हो गयी थी इन सारी बातो को अमीला के घर वालो को समझाया गया। और अमीला के पति और उसके घर वालो को अमीला की हालत देखते हुए ये भी कहा गया था कि ''अमीला शायद बचे या न बचे'' इन सारी बातो को समझाकर अमीला को आपरेशन मे लिया गया आपरेशन के दौरान सबसे जरूरी चीज थी जिसकी सबसे ज्यादा आवश्यकता थी वो बल्ड था जिसकी व्यवस्था अस्पताल द्वारा किया गया और आपरेशन शुरू किया गया ।

आपरेशन करने के दौरान हमने देखा कि वस्तव मे अमीला की बच्चादानी फट गयी थी और बच्चा वहां से निकल कर पेट मे अलग से पडा हुआ था जिसे देख कर और भी ज्यादा हमे दुखः हुआ जिसके कारण अमीला कि हालत और खराब हुई थी अन्दर ही अन्दर अमीला का ब्लीडिंग भी शुरू था । जिसका न अमीला को और किसी और को पता था अमीला कि बच्चादानी पुरी तरह से फटी हुई थी जिसके चलते डाक्टरो को अमीला की जान बचाने के लिए उसके बच्चेदानी को निकालना पडा इस तरह अमीला का आपरेशन काफी लम्बे समय तक चला और अमीला को सुरक्षित आपरेशन रूम से बाहर निकाले।

अमीला को आपरेशन रूम से बाहर तो निकाल लिए थे फिर भी वो पुरी तरह से खतरे से बाहर नही थी। अमीला इन सभी बातो से अंनजान बेहोश पडी हुई थी। उसे देखकर हमारा भी दिल भर आता था हालाकी हम सिस्टर है हम तो ये सब देखते रहते है। फिर हम सभी का मन बहुत दुखीः होता है कि अगर सही समय पर सही इलाज न हो तो क्या से क्या हो जाता है। पर इस समय हमे तो अपना काम करना और अमीला को स्वस्थ देखना था।

घर वालो की कोशिश उनकी उम्मीद और हम सब की मेहनत धीरे-धीरे रंग ला रही थी अमीला ठीक होने लगी। अमीला के आपरेशन के तीसरे चौथे दिन मे वो उठ कर बैठने लगी । हमने उसके पास जाकर उससे बात की और उसे खाने-पीने के बात बताने लगे अमीला को देखकर ऐसा लगता था की वो अभी भी अपने अंतरआत्मा से लड रही है। उसका चेहरा शांत तो था पर मन मे बहुत सारी सवाल है जिसे वो अभी कह नही रही है।

हालाकि अमीला को इस बारे मे कोई जानकारी नही थी कि वो दुबारा मां नही बन सकती, फिर भी वो बहुत शांत थी शायद यह सोचती थी कि उसकी जिंदगी बच गई यही काफी है। अमीला और उसके घर वालो का इस स्थिति मे आना न केवल कठिन था अपितु हमारे लिए भी अमीला को बचाना किसी चुनौती से कम नही था। हम अमीला कि किस्मत तो नही बदल सकते पर उसे जीवीत देखकर खुश जरूर है, क्योकि कहीं न कहीं अमीला के अंदर वो जिंदगी की चाहत थी, जिससे वो मौत से भी लड आई और हम सब उसके इस लडाई मे शामिल होकर उसका साथ दिए।

साल 2019 में शहीद अस्पताल में हुई जचकियों की समीक्षा

- 2536 महिलाओं ने 2573 बच्चों को जन्म दिया |
- 2573 बच्चों मे से, 2499 बच्चे अकेले पैदा हुए और 37 बच्चे जुड़वा पैदा हुए |

ग्राफ क्र. 1- जचकीयों के प्रकार

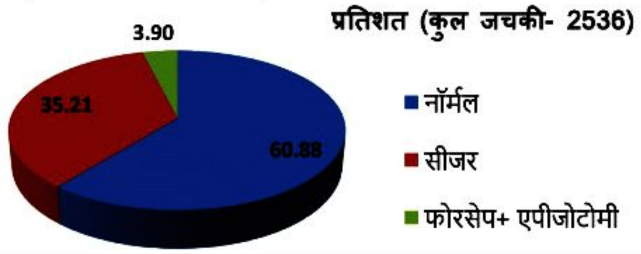

ग्राफ क्र. 2- लिंग के अनुसार जचकी की समीक्षा

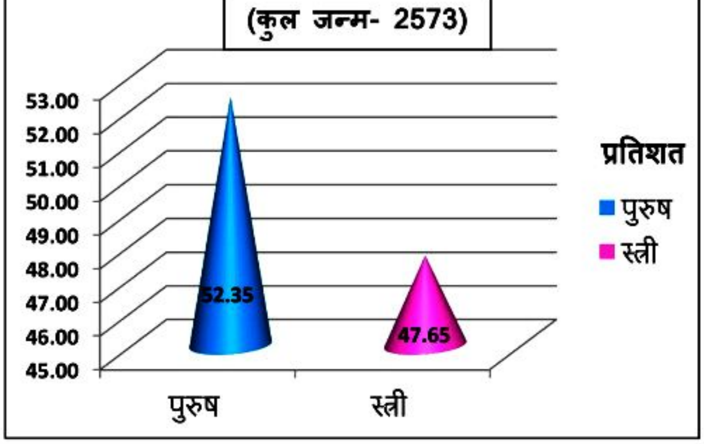

सम्मानीय पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका से संबंधित आवश्यक सुझाव हेतु शहीद अस्पताल के पते पर पत्र-व्यवहार या ई-मेल द्वारा अपने सुझाव भेज सकते है ।

संपादक - दीपांजली, हेमलता, उमा "स्टाफ सिस्टर, शहीद अस्पताल, दल्ली राजहरा" मुद्रक - राव प्रिंटर्स, राजहरा

स्वास्थ्य संगवारी के अगले अंक में शिशुओं की देखभाल के बारे में चर्चा करेंगे ।